जब कुत्ता भी स्वर्ग गया

मदनमोहन उपेन्द्र



जब कुत्ता भी स्वर्ग गया

मदनमोहन उपेन्द्र

जाह्नवी प्रकाशन
दिल्ली-110095

ISBN 81-88464-25-2

संस्करण : *2007*

मूल्य : 30.00 रुपये (तीस रुपये)

प्रकाशक : जाह्नवी प्रकाशन
ए-71, फेस-2, विवेक विहार, दिल्ली-95

शब्द-संयोजन : जय कम्प्यूटर्स, गली नं. 16, विश्वासनगर, दिल्ली-32

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

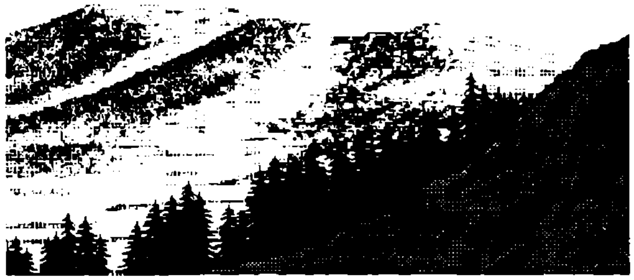
JAB KUTTA BHI SUWARG GYA *by* Madanmohan Upendra **Rs. 30.00**

दो शब्द

आज के बच्चे काल्पनिक विदेशी कहानियो में डूबे रहते हैं, जिनसे न तो उन्हें अपनी संस्कृति और इतिहास की जानकारी होती है और न ही वे अपने ज्ञान को बढ़ा पाते हैं। ऐसी कहानियाँ तथा कॉमिक्स उनके दिमाग को कुन्द तथा विकृत कर देते हैं।

ये पौराणिक कथायें रोचक सरल भाषा में भारतीय दर्शन, इतिहास एवं महापुरुषों के साहसी कारनामों की जानकारी कराती हैं। बच्चों को साहसी बनने की प्रेरणा भी देती हैं।

— ***मदनमोहन उपेन्द्र***



क्रमांक

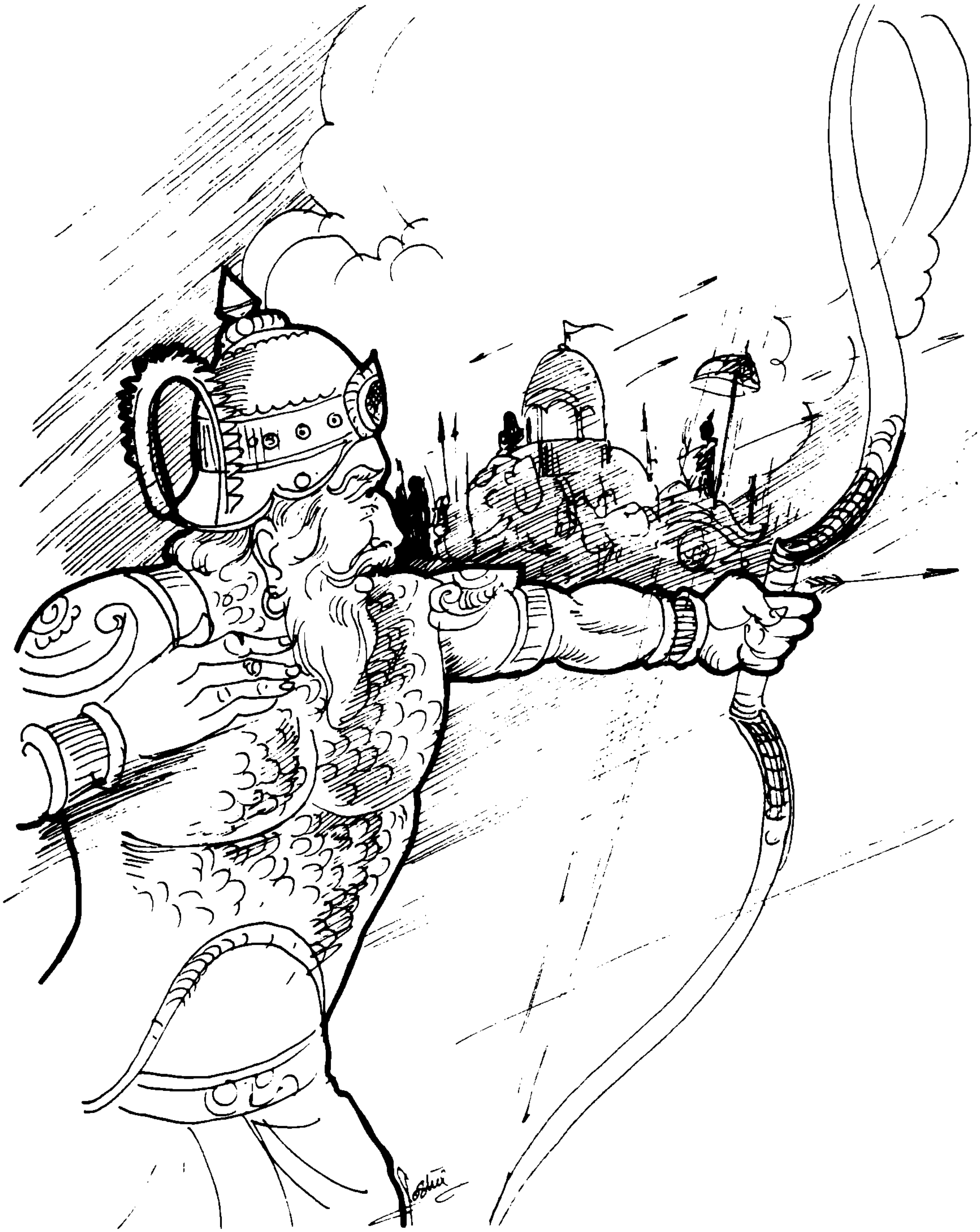
उसने झूठ कैसे बोला?

जब अर्जुन को युद्ध से लौटने पर मालूम हुआ कि प्रिय पुत्र अभिमन्यु धोखे से जयद्रथ द्वारा माया गया, तो अर्जुन शोक में डूब गये। वीर योद्धा तो युद्ध में मारा ही जाता है लेकिन छल-कपट से मारे जाने का अधिक शोक्ष सभी को था, इसलिए अर्जुन का मन घृणा और क्रोध से भर गया। जयद्रथ के इस घृणित कर्म पर वे इतने क्रोधावेश में आ गये कि यदि उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि यदि अगले दिन सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ का वध न कर सके तो स्वयं अग्नि की चिता में भस्म हो जायेंगे।

जब अर्जुन की इस प्रतिज्ञा की जानकारी दुर्योधन को हुई तो उसने जयद्रथ को कहीं छिपा दिया। लेकिन अर्जुन ने श्रीकृष्ण के सहयोग से जयद्रथ को मार ही डाला। कैसे मारा, इसकी कथा अलग है।

जयद्रथ अश्वत्थामा का पुत्र और गुरु द्रोणाचार्य का नाती था, इसलिए इसके मरने से दोनों महारथी बहुत क्षुब्ध हुए थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि अगले दिन महाभारत में अश्वत्थामा और द्रोणाचार्य ने ऐसा भयंकर युद्ध किया कि पाण्डवों की सेना के छक्के छूटने लगे। युधिष्ठिर बोले कि बिना अश्वत्थामा का वध किये पाण्डव नहीं जीतेंगे। कृष्ण ने बताया कि गुरु द्रोण ने एक प्रतिज्ञा की है कि यदि अश्वत्थामा मारा गया तो वे युद्ध में हथियार डाल देंगे, इसलिए अश्वत्थामा का वध बहुत जरूरी है। तब अर्जुन ने गांडीव में टंकार भर कर कहा कि मैं कल के युद्ध में अश्वत्थामा को अवश्य समाप्त कर दूँगा। दूसरे दिन घनघोर युद्ध हुआ। अर्जुन के बाणों का निशाना अश्वत्थामा को देखकर दुर्योधन

चिन्तित हो गया, इसलिए उसने अश्वत्थामा को चतुरंगिनी सेना के बीच में सुरक्षित कर दिया।



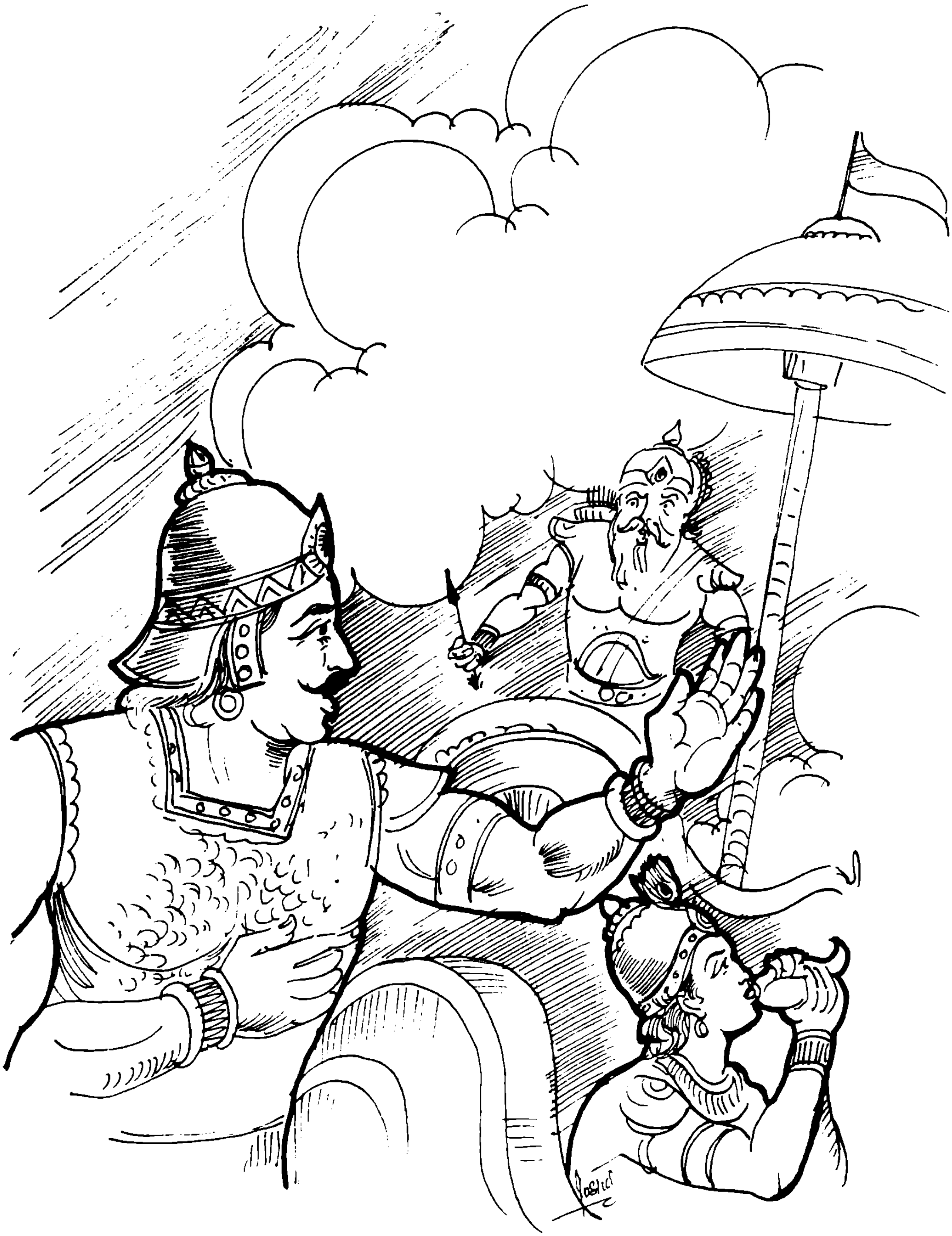
अर्जुन महारथियों की सेना की दीवार को भेदकर अश्वत्थामा को निशाना बनाना चाहते थे। उन्हें लगातार कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिल पा रही थी। उनके लिए सबसे बड़ी बाधा गुरु द्रोण ही थे। उनकी भीषण बाण-वर्षा सेना को विचलित कर रही थी। श्रीकृष्ण ने देखा कि बिना द्रोणाचार्य की बाण-वर्षा को रोके अश्वत्थामा का वध नहीं हो सकता और इसी कारण पाण्डवों की हार निश्चय है। तब कृष्ण ने अचानक एक उपाय सोचा और वह चिल्ला उठे—''अश्वत्थामा मारा गया, अश्वत्थामा मारा गया!''

द्रोणाचार्य समझ गये। कृष्ण तो झूठा और छलिया है और ललकार कर बोले, ''छलिया कृष्ण, झूठ क्यों बोलता है, तेरा किसी को विश्वास नहीं।''

तब श्रीकृष्ण समझ गये कि आचार्य द्रोण एकमात्र युधिष्ठिर की बात पर विश्वास कर सकते हैं और वह झूठ बोल ही नहीं सकते हैं। कृष्ण अर्जुन के रथ से कूदकर युधिष्ठिर के रथ पर पहुँच गये और बताया कि धर्मराज, बिना गुरुदेव को अस्त्ररहित किये युद्ध में विजय सम्भव नहीं है और गुरुदेव अश्वत्थामा के वध होने पर हथियार डाल देंगे, इसलिए आप चिल्लाकर कह दो कि अश्वत्थामा मारा गया।

युधिष्ठिर बोले, 'मैं झूठ नहीं बोलूँगा चूंकि अभी अश्वत्थामा नहीं मारा गया है। भला कैसे झूठ को सत्य कहूँ?' तो आप यह तो कह सकते हैं कि अश्वत्थामा हाथी मारा गया! कृष्ण ने कहा। तब युधिष्ठिर ने सारथी से पूछा। सारथी ने बताया, हाँ, महाराज, अश्वत्थामा नाम का कुंजर मारा गया। तब कृष्ण ने कहा कि धर्मराज बस अब आप चिल्लाकर कहिए कि अश्वत्थामा मारा गया—नर नहीं, कुंजर था, तब भारी मन से युधिष्ठिर ने जैसे ही कहा कि अश्वत्थामा मारा गया....श्रीकृष्ण ने शंख बजाया और इतना कोलाहल हुआ कि आगे के शब्द गुरु द्रोण न सुन सके और हथियार रखकर सिर झुकाकर बैठ गये।

तब श्रीकृष्ण भागकर अर्जुन के रथ पर पहुँच गये। अर्जुन ने भी गुरु द्रोण



को हाथ जोड़कर बैठे देखकर बाण चलानबन्द कर दिया था। तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि देख क्या रहे हो, बाण चलाओ। ऐसा स्वर्ण अवसर नहीं मिलेगा। तब भावुक होकर अर्जुन बोले—"निहत्थे पर कैसे बाण चलाऊँ? फिर गुरुदेव का वध करने को मन नहीं कर रहा है।"

श्रीकृष्ण बोले, "पार्थ, युद्धभूमि में दो ही रिश्ते बचे रह जाते हैं—शत्रु और मित्र! अगर वे गुरु के रिश्ते को मानते तो तुमसे युद्ध न करते और दुराचारी कौरवों का साथ न निभाते, अब तुम्हारा यही धर्म है कि बाण चलाओ।"

कृष्ण का धर्मोपदेश अर्जुन की समझ में आ गया और उन्होंने एक ही बाण से गुरु द्रोण का हृदय विदीर्ण कर दिया।

जब कुत्ता भी स्वर्ग गया

महाभारत के अभिशाप और राजपाट के मोहजाल से अधिक परेशान होकर धर्मराज युधिष्ठिर ने एक दिन अपने सभी भाइयों को बुलाकर कहा कि अब मेरा मन राजपाट से ऊब गया है और मैं स्वर्ग को प्रस्थान करना चाहता हूँ। धर्मराज के ऐसे वचन सुनकर सभी भाइयों ने एक स्वर से कहा कि हम भी आपके साथ स्वर्ग को चलेंगे।

आखिरकार धर्मराज ने राजपाट अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को सौंपकर सभी भाइयों और द्रोपदी के साथ स्वर्ग की ओ प्रस्थान कर दिया। चलते-चलते युधिष्ठिर ने सभी से कहा कि स्वर्ग के द्वार तक वही पहुँच पाता है जिसका जीवन निर्दोष और निष्कलंक रहा हो।

भाइयों ने यह बात स्वीकार की और साथ में चलते हुए बूढ़े कुत्ते को दुतकार कर वापिस करना चाहा कि यह तो निष्कलुष कहां होगा। लेकिन युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि इसे मत दुतकारो, इसे भी चलने दो। अब तक हमारे साथ रहा है, तो बेचारा बुढ़ापे में अब कहाँ जायेगा।

उत्तर भारत के मैदानी मार्ग को पार करके धीरे-धीरे पांडव हिमालय की तरफ बढ़ते चले जा रहे थे। चलते-चलते जब हिमालय की छोर पर तराई में पहुँचे तो उनके चेहरे मलिन होने लगे। अब हिमालय की चढ़ाई उनके लिए कठिन लगने लगी थी। थोड़े ही चल पाये कि उबड़-खाबड़ पहाड़ी से द्रोपदी का पाँव फिसल गया, अर्जुन ने उसे उठाया और पानी मुँह में डाला। कुछ ही क्षणों में द्रोपदी के प्राण-पखेरू उड़ गये। शोक में डूबे चारों भाइयों को देखकर धर्मराज



बोले कि अब शोक करना व्यर्थ है। स्वर्ग का मार्ग कठिन और प्रारब्ध का मार्ग है। द्रोपदी के प्रारब्ध में इतना ही था, वह इतने की ही उत्तराधिकारिणी थीं। तब

भीम ने पूछा—"उनका क्या दोष था, यह तो बता दो, महाराज?" धर्मराज बोले, "वह पाँचों पाण्डवों की पत्नी थी लेकिन उसका लगाव सबसे अधिक अर्जुन से था। यह पतियों के प्रति भेद करना उसका अवगुण था। उसने पतिव्रत धर्म का सही पालन नहीं किया था।

धर्मराज की ज्ञानपूर्ण वाणी सुनकर सभी में आगे बढ़ गये। कुछ ही ऊपर चढ़ाई चढ़ पाये थे कि भीम का भी पाँव फिसल गया और देखते-देखते उनके भी प्राण निकल गये। तब पूछने पर धर्मराज ने बताया भीम को अपने बलवान होने का बड़ा घमण्ड था और वह अपनी पत्नियों के प्रति भी निष्ठावान नहीं था। बहुपत्नीधारी चरित्रवान नहीं होता। पत्नियाँ तो मेरी भी कई थीं, अर्जुन ने शंका जताई।" धर्मराज बोले, "तब तो तुम भी निर्दोष नहीं हो सकते हो क्योंकि बहुत-सी स्त्रियों से विवाह मनुष्य प्रेम के कारण नहीं वरन वासना के क्षणिक सुख और आवेग के लिए करता है।"

धर्मराज के ऐसे वचन सुनकर अर्जुन के पाँव भी डगमगाने लगे और सतयोजन तक चलने के बाद एक शिला से टकराकर वह भी भूमि पर गिर पड़ा और प्राण त्याग दिये।

पत्नी और दोनों भाइयों की मृत्यु के शोक को नकुल और सहदेव सहन न कर सके और उन्होंने भी अर्जुन की मृत्यु के बाद प्राण त्याग दिये।

आखिर में एकमात्र धर्मराज और साथ में उनका वृद्ध कुत्ता ही स्वर्ग के मार्ग पर शेष रह गया था। धर्मराज अपने वफादार कुत्ते के साथ अनवरत स्वर्ग मार्ग पर बढ़ते-बढ़ते अन्ततः स्वर्ग के द्वार पर पहुँच ही गये, तो सामने धर्मराज को देवराज इन्द्र का सात घोड़ों वाला रथ दिखाई दिया जिसके ऊपर स्वयं देवराज इन्द्र विराजमान थे।

धर्मराज को आदर सहित पुकारते हुए इन्द्र ने कहा—"आइये धर्मराज, रथ पर बैठिये, यह आपके लिए ही लाया गया है। यह रथ आपको वायुमार्ग से



क्षणभर में स्वर्ग पहुँचा देगा।" धर्मराज रथ पर चढ़कर बैठ गये, पीछे से कुत्ता भी जब चढ़ गया तो देवराज कुत्ते को दुतकारने लगे। तब युधिष्ठिर से न रहा गया और बोले-"महाराज, इस कुत्ते को क्यों उतार रहे हैं? यह तो मेरे साथ आया है।" इन्द्र ने कहा "यह कुत्ता स्वर्ग नहीं जा सकता।" धर्मराज बोले–"क्यों नहीं जा सकता? आखिर यह भी तो जीवधारी है, निष्कलुष है। यदि कलुषित होता तो मेरे भाइयों की तरह राह में ही प्राण त्याग देता। यदि कुत्ता नहीं जायेगा तो मैं भी स्वर्ग नहीं जाऊँगा।"

धर्मराज बोले, "सोच लो, धर्मराज! कूकर के लिए स्वर्ग-सुख का त्याग मत करो।"

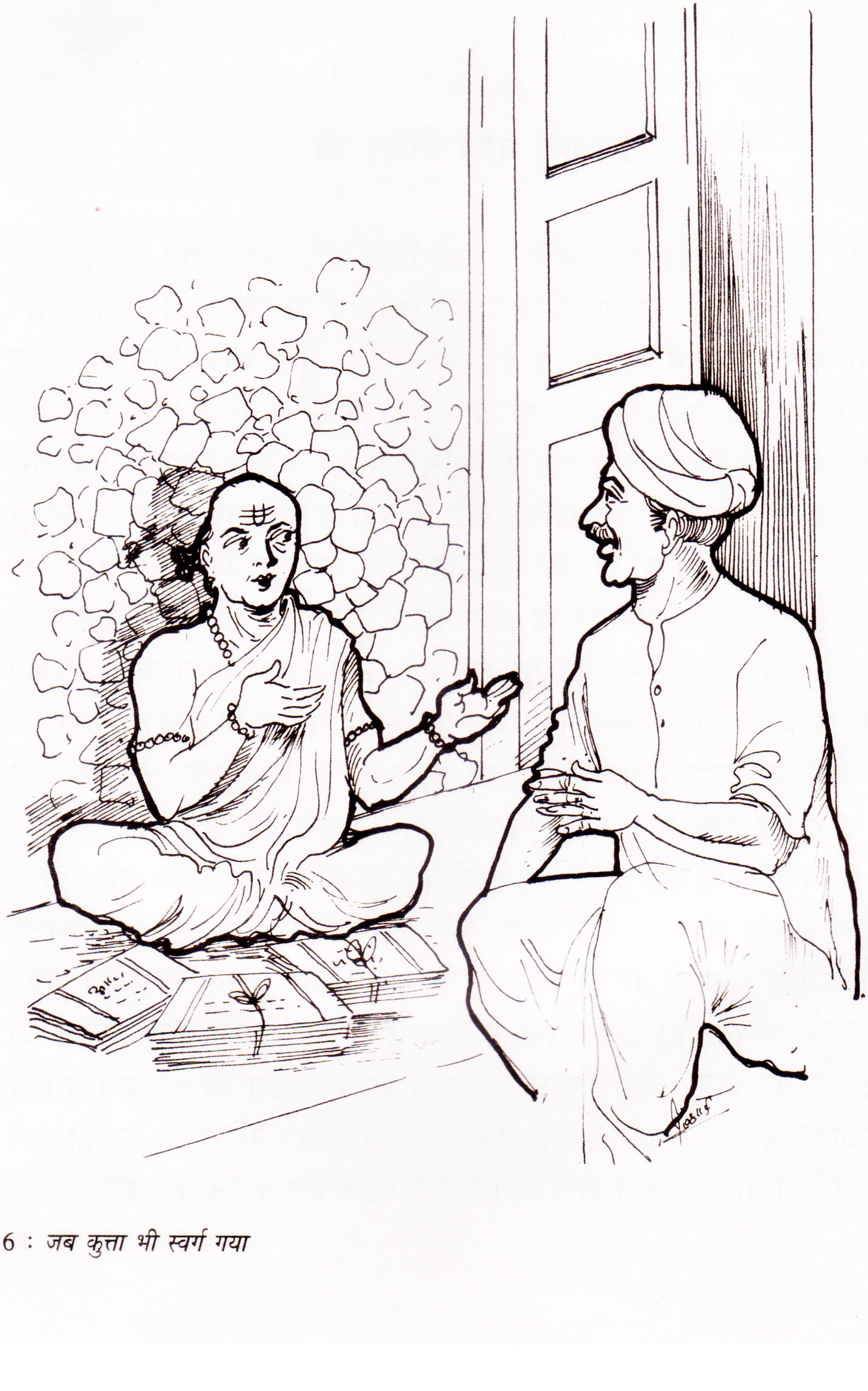
"हाँ, खूब सोच लिया, यह कुत्ता मेरी वफादारी और निष्ठा से आजीवन सेवा करता रहा है, साथ नहीं छोड़ा है। तो अब मैं इसे कैसे छोड़ दूँ? सुख के अन्तिम क्षणों में इसे छोड़कर मैं कुत्ते से भी अधिक कृतघ्न हो जाऊँगा।

धर्मराज की ऐसी निष्ठा देखकर देवराज इन्द्र ने उन्हें कुत्ते सहित स्वर्ग जाने की आज्ञा दे दी।

सितारों वाले पंडित जी

एक गाँव में एक पंडित जी रहते थे। उनके पिता ऊँचे विद्वान थे। किन्तु उनके पुत्र अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे। लेकिन उन्हें तंत्र-मंत्र की जानकारी अधिक थी। इसलिए लोग इन्हें कम महत्त्व देते थे। काला अक्षर भैंस बराबर होने के कारण उनका गुजारा भी मुश्किल हो गया था। तब उनकी पत्नी ने एक दिन उन्हें समझाया कि ऐसे पिता की सम्पत्ति के भरोसे कब तक गुजारा चलेगा। जब सारी जमा सम्पत्ति समाप्त हो जायेगी तो बाद में क्या करोगे, तुम से तो वे पंडित अच्छे हैं जो सड़क किनारे बैठकर ही अपना पेट भरने लायक कमा लेते हैं।

यह सुनकर पंडित जी को भी कुछ मन में चमत्कार का-सा आभास हुआ और उन्होंने भी कुछ करने की ठान ली। तब उन्होंने एक काला पत्थर लिया। खड़िया की एक डली ली तथा पिता की पोथी-पत्रा कपड़ों में बांधकर शहर की ओर चल दिये। शहर में पहुंचकर पंडित जी सड़क के किनारे पर बैठ गये और काले पत्थर पर खड़िया से आड़ी-तिरछी रेखायें बनाने लगे तथा ऊपर को मुँह करके बड़बड़ाते हुए, राह चलते हुए लोगों को उनका भविष्य बताने लगे, उनकी बातें धूल में कठू का काम करने लगीं। कुछ बातें सही भी होने लगीं। फलस्वरूप पंडित जी सारे शहर में प्रसिद्ध हो गये। दूर-दूर से लोग अपनी समस्यायें लेकर उनके पास आने लगे। उन्हें लोगों ने सितारों से बातें करने वाला पंडित जी कहना शुरू कर दिया। एक कुम्हार भी अपने घर पर पंडित जी की बातें सुनकर दौड़ा आया और रो-रो कर अपनी समस्या कहने लगा। पंडित जी उसकी बातें समझ नहीं पाये तब उससे शांत होकर धैर्य रखते हुए बताने को कहा।



कुम्हार ने रोते हुए कहा कि पंडित जी, मेरा गधा खो गया है। एक सप्ताह से मिल नहीं रहा है। पंडित जी को एक दिन पहले एक किसान ने बताया था कि मेरे खेत के अंधे कुएं में एक गधा खड़ा है। अगर मर गया तो पाप पड़ेगा, इससे छुटकारे का उपाय बतायें। पंडित जी ने उसे उपाय बताकर कहा कि गधा तीसदिन तक नहीं मरेगा, कुम्हार आकर ले जायेगा।

इस प्रकार पंडित जी को गधे की जानकारी थी। उत्तर दिया कि गधा दक्षिण दिशा में रस्सी से पैर बंधा अंधे कुएं में पड़ा है और ऐसा ही हुआ। कुम्हार का गधा मिल गया तो वह जय-जयकार करता हुआ पंडित जी के पास आया और अनाज दे गया। दूसरे दिन एक औरत रोती हुई पंडित जी के पास आयी और बोली—पंडित जी मैं तो अब बच नहीं सकती, मुझे तो फांसी लगेगी। आप मुझे बचाओ। मुझ पर दया करो। पंडित जी ने उसके सिर पर हाथ रखा और पूछा कि मुझे सब बातें बता दो, मैं तुम्हें फांसी से बचा दूंगा? उस औरत ने कहा, पंडित जी, सामने दूर राजा के सिपाही खड़े हैं, वे आपसे राजा की अंगूठी के बारे में पूछेंगे। आप उन्हें बता देंगे तो मैं मारी जाऊँगी। अँगूठी मैंने चुरायी है।'' पंडित जी ने कहा, ''पगली, तुरन्त जाकर अँगूठी पानी की टंकी में डाल दे, मैं तेरी फांसी बचा दूँगा।'' औरत ने ऐसा ही किया और भाग कर चली गयी। जब राजा के सिपाही आये तो पंडित जी देर तक कुछ नहीं बोले और सिपाहियों को बैठा रखा ताकि औरत टंकी में अँगूठी को डाल आये। जब औरत ने पंडित जी से लौट कर बताया कि काम हो गया, तब पंडित जी ने ऊपर सितारों को निहारा, उनसे बातें करते रहे और तब बोले कि जाओ, राजा को बता देना कि अँगूठी चोरी नहीं हुई है, किसी ने पानी की टंकी में डाल दी है। गुसलखाने की टंकी में देखा जाय। तब सिपाहियों को विश्वास नहीं हुआ और पंडित जी से दो दिन बाद आने को कह गये।

दो दिन बाद राजा के सिपाही पंडित जी के पास आए और उन्हें राजा के



पास ले गये। राजा ने कहा, ''तुम महान ज्योतिषी हो। बताओ, मेरी अँगूठी कौन ले गया है? अगर नहीं बता सके तो तुम्हें सूली पर चढ़ा दिया जायेगा और सही बताया तो सम्मान दिया जायेगा।'' पंडित जी बहुत देर तक आसमान में देखते रहे, बड़बड़ाते रहे और काले पत्थर पर निशान बनाते रहे। फिर बोले, ''महाराज! आपकी अँगूठी कोई नहीं ले गया है, उसे किसी ने गुसलखाने की टंकी में डाल दिया है।'' राजा ने टंकी का पानी फौरन खाली कराया और राजा यह देखकर चकित रह गया कि उसकी अँगूठी टंकी की तली में पड़ी थी और अँगूठी का हीरा चमक रहा था। राजा बहुत खुश हुआ और पंडित का बहुत सम्मान किया तथा उसी दिन उन्हें राजपुरोहित नियुक्त कर दिया।

अंधा न्याय

अरब देश में एक राजा था, उसका नाम था अफवातून। राजा अपने अनोखे कामों के लिए प्रसिद्ध था इसीलिए लोग उसे उसके नाम की बजाय उसके कामों से अधिक जानते थे। उसके कामों को लोग हँसी-हँसी में अफवातूनी काम कहते थे। अफवातून राजा की एक विशेषता यह भी थी कि वह जिद्दी बहुत था। जिस काम को उसे करना होता था, भले वह काम गलत हो, मंत्री, सेना नायक मना करें लेकिन वह किसी की भी बात को नहीं मानता था और काम पूरा करके ही विश्राम करता था, भले जनता में उसकी कितनी भी बुराई क्यों न हो, वह इसकी परवाह नहीं करता था।

एक बार एक ठग राजा के पास आया और उसने कहा कि मैं यह घोड़ा एक जमींदार से ठग कर लाया था लेकिन इसकी जीन इतनी कमजोर थी कि वह टूट गयी और मैं घोड़े पर से गिर गया जिसके कारण मेरा पैर टूट गया। मैं अब लगड़ा होने से बहुत परेशान हूँ। राजा मेरा न्याय करे। राजा ने तुरन्त जमींदार को बुलवाया और उससे घोड़े की कमजोर जीन के बारे में पूछा और ठग के गिरने का हरजाना देने को कहा? इस बात पर जमींदार ने जवाब दिया कि महाराज, मैंने यह जीन राज्य के मशहूर कारीगर से पूरी मजदूरी देकर बनवायी थी। मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। राजा ने फौरन उस कारीगर को बुलवाया और कमजोर जीन बनाने का कारण पूछा कि तुमने इतनी कमजोर जीन क्यों बनायी कि घुड़सवार की टांग टूट गयी। क्यों न तुम्हें कड़ी सजा दी जाये? कारीगर बोला, ''महाराज, मेरा इसमें कोई भी अपराध नहीं है, मैंने तो जीन की सिलाई



के लिए तांत राज्य के मशहूर तांतिये नकटू खाँ से बनवाया था। वह टूट गयी तो इसमें मेरा क्या दोष है? मैंने तो नकटू तांतिये को तांत के पूरे पैसे दिये थे।

तब राजा ने फौरन नकटू तांतिया को बुलवाया और उससे कमजोर तांत बनाने का कारण पूछा। तांतिया बेचारा सीधा-सादा गरीब आदमी था। कभी वह राजदरबार में नहीं लाया गया था, इसने कभी अदालतें भी नहीं देखी थी। इसलिए वह बहुत घबराया हुआ था, वह थर-थर काँप रहा था। इसी कारण वह राजा के सामने बहुत देर तक चुपचाप खड़ा रहा। डर के कारण उसकी आवाज भी नहीं निकली। जब वह कुछ नहीं बोला तो राजा ने उसे अपराधी मान लिया और उसे फौरन फांसी पर लटकाने की सजा सुना दी।

जब यह खबर राज्य के लोगों को मिली तो बहुत-सी भीड़ दरबार के बाहर इकटठी हो गयी और राजा से बेचारे नकटू तांतिये को माफ करने की अपील करने लगी। सभी ने राजा से कहा कि यह गरीब है, इसका कोई अपराध नहीं है, लेकिन अफवातून राजा तो पूरी तरह जिद्दी और अन्धा था। जो उसकी समझ में बैठ गया, उसे बदलता नहीं था। नतीजा यह हुआ कि बेचारे नकटू को निरपराध होते हुए भी फांसी की सजा झेलनी पड़ी—यही तो था अफवातून राजा का अन्धा न्याय।

नयनकुमारी

एक थी मुनिया और उसकी छोटी बहन थी चुनिया। चुनिया-मुनिया दोनों ही अपनी दादी की बड़ी प्यारी थीं। लेकिन जहाँ मुनिया अधिक खुशमिजाज थी, उतनी ही चुनिया अधिक चिड़चिड़े स्वभाव की थी। वह हमेशा रोती रहती थी और बात-बात पर जिद करके सारे घर को परेशान करती थी। उसका सबसे बड़ा हथियार था बात-बात पर रोना। उसे जो भी अपनी जिद पूरी करानी होती थी, फौरन रोना शुरू कर देती थी। यानी कि रोना उसका एकमात्र तरीका था अपनी बात मनवाने का। इसका परिणाम यह हुआ कि चुनिया ने रोते-रोते अपनी आँखें भी खराब कर ली थी और सारे घर के लोग परेशान थे। उसकी जरा-जरा-सी बात को फौरन मान लेते थे ताकि वह कम से कम रोये लेकिन वह भी ऐसी जिद्दी थी कि दो-चार बार बिना रोये नहीं मानती थी।

दादी भी परेशान थी कि चुनिया का रोना किस तरह बन्द किया जाए? एक दिन उसे अचानक एक अच्छा उपाय सूझा। उसने चुनिया-मुनिया दोनों को बुलाया और पास बैठाकर एक कहानी सुनाई—

"एक दूरदेश की राजकुमारी थी। वह जंगल में भटकते-भटकते सो गयी और राजा उसे खोजते-खोजते पागल हो गया। एक जादूगर ने राजा को बताया कि जब तुम उसे सच्चे मन से याद करोगे और रोओगे नहीं तो वह तुम्हारी आँखों में आकर बस जायेगी। राजा ने रोना बन्द कर दिया। अब राजकुमारी राजा की आँखों में आकर बस गयी। देखो मुनिया हर समय हँसती रहती है और कभी नहीं रोती है। उसकी आँखों में नयनकुमारी बस गयी है।" चुनिया ने



उसकी आँखों में गौर से देखा तो अपनी परछाईं नजर आयी और वह राजकुमारी जैसी ही थी। तब उसे दादी की बात पर विश्वास हो गया। उस दिन वह बिल्कुल नहीं रोयी। तब दादी ने शाम को मुनिया से कहा कि देख चुनिया को



आँखों में नयन कुमारी आ गयी है। तब मुनिया ने चुनिया की आँखों में अपनी परछाईं देखकर कहा कि हाँ दादी, आ गयी है नयनकुमारी। बस फिर क्या था, चुनिया खुश हो गयी और उसने रोना बन्द कर दिया। तब से चुनिया फिर बिल्कुल नहीं रोयी क्योंकि उसे नयनकुमारी का नयनों से खोने का डर जो था।